मोरंगे

नवम्बर–दिसम्बर 2016

इस बार

मेवा रेबारी, उम्र–12 वर्ष, समूह–फूल

खिड़की

3 गूंज

कविताएँ

6 स्कूल बने बोदल में नया–नया

7 लालू–मालू

8 चलते–चलते कच्चे रस्ते

9 कुँए का चूहा

कहानियाँ

10 समझदार बकरी / जान बची

11 बोतल का भूत

12 सपना

13 कुतिया

14 हम सब दोस्त

15 थोड़ा–थोड़ा

याद की धूप–छाँव में

16 दो बच्चे

बात लै चीत लै

20 गुस्सा

21 भाषा की सहेलियाँ ...

22 हीहीही–ठीठीठी

23 कुछ हमने बढ़ायी

सम्पादन : विष्णु गोपाल मीणा
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : जीवनेद्र सिंह
वितरण : जितेन्द्र अग्रवाल
आवरण पर चित्र – रिंकु मीना, उम्र–8 वर्ष, समूह–रौशनी
वर्ष 8 अंक 77–78

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, विभा–अमेरिका, पोर्टिकस–निदरलेण्ड, एच.टी. पारेख व W.C.T. के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
विजेन्द्र पाल
सचिव,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
हॉटल सिटी हार्ट के सामने,
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

गूंज

धर्म सिंह गुर्जर, उम्र–10 वर्ष, समूह–लहर

नन्हे खरगोश थाओ थाओ का घर पेड़ के नीचे था। एक दिन थाओ थाओ अपनी टोकरी लेकर कुकुरमुत्ते चुनने जा रहा था। उसकी माँ ने कहा, ''बेटे जल्दी घर आ जाना।''

चलते–चलते थाओ थाओ एक झील के किनारे जा पहुँचा। झील के किनारे एक पेड़ था, जिसकी टहनी पानी के ऊपर निकली हुई थी। थाओ थाओ उस टहनी को पकड़कर झूलने लगा। थाओ थाओ को झूलने में बड़ा मजा आ रहा था। अचानक ''छप'' की आवाज के साथ थाओ थाओ पानी में गिर पड़ा और उसकी पतलून भीग गई। थाओ थाओ अपनी पतलून उतारकर सुखाने लगा। तभी एक गिलहरी वहाँ आ गई। थाओ थाओ ने टोकरी की आड़ लेकर फौरन पतलून पहन ली और मुँह बनाकर वहाँ से चल दिया। थाओ थाओ के मुँह बनाने पर गिलहरी को गुस्सा आ गया।

थाओ थाओ पहाड़ की ढलान पर जा पहुँचा। ''ओ हो! यहाँ तो बेशुमार कुकुरमुत्ते उगे हुए हैं!'' यह कहता हुआ वह खुशी से उछल पड़ा। थाओ थाओ कुकुरमुत्ते तोड़–तोड़कर टोकरी में फेंकता गया। अचानक एक कुकुरमुत्ता भालू के चेहरे पर जा लगा। इससे भालू को गुस्सा आ गया और उसने भी एक कुकुरमुत्ता उठाकर थाओ थाओ के मुँह पर दे मारा। थाओ थाओ वहाँ से भाग खड़ा हुआ और भालू उसकी टोकरी उठाकर चलता बना।

थाओ थाओ घाटी में एक तालाब के किनारे जा पहुँचा। थाओ थाओ तालाब से पानी पीने लगा। उसे पानी में एक परछाई नजर आई, जिसका चेहरा बड़ा गंदा था। थाओ थाओ ने कहा, ''ओह, कितना बदसूरत चेहरा है!''

वह मुड़ा और जोर से चिल्लाया, ''बदसूरत!'' साथ ही दूर से भी ''बदसूरत'' की आवाज सुनाई दी। थाओ थाओ उठ खड़ा हुआ और उसने जोर से चिल्लाया, ''कौन हो तुम?'' दूर से भी यही आवाज सुनाई दी, ''कौन हो तुम?''

''मैं थाओ थाओ हूँ।'' दूर से फिर वही आवाज आई, ''मैं थाओ थाओ हूँ।''

''मैं थाओ थाओ हूँ। '' की आवाज घाटी में बार–बार गूंज उठी।

''बदमाश'' थाओ थाओ तो मैं हूँ, तुम नहीं।'' दूर से किसी ने फिर इसी बात को दोहराया।

दिन ढल चुका था और अंधेरा छाने लगा था। थाओ थाओ को डर लगने लगा और वह तेजी से अपने घर की तरफ भागने लगा। जब थाओ थाओ घर पहुँचा, तो

आरती मीना, उम्र–11 वर्ष, समूह–उजाला

उसने वह सब जो घाटी में हुआ, अपनी माँ को बताया। ''आज तुम सो जाओ, कल चलकर देखेंगे।'' माँ ने कहा।

अगली सुबह थाओ थाओ का मन नहीं हो रहा था कि वह घाटी में जाए, इसलिए वह माँ का हाथ पकड़कर बोला, ''नहीं माँ, मैं वहाँ नहीं जाऊंगा। वे मुझे गालियाँ देंगे।''

माँ ने कहा, ''अगर तुम दूसरों से नम्रता से पेश आओगे तो वे तुमको गालियाँ नहीं देंगे।'' वे दोनों घाटी में आ गए। थाओ थाओ ने अपनी माँ की तरफ देखा। माँ ने उसका हौसला बढ़ाते हुए कहा, ''जोर से पुकारो।''

रामावतार नायक, उम्र–11 वर्ष, समूह–वीर शिवाजी

थाओ थाओ पहाड़ों की तरफ मुँह करके जोर से चिल्लाया, ''नमस्ते, दोस्तों।''

इसके जवाब में उसकी अपनी ही आवाज घाटी में गूंज उठी, ''नमस्ते, दोस्तों। ''थाओ थाओ खुशी से मुड़कर अपनी माँ की तरफ देखने लगा। माँ ने उसे बतलाया, ''बेटा, इसे गूंज कहते हैं। यह किसी और की नहीं बल्कि तुम्हारी ही आवाज है, जो पहाड़ों से टकराकर सुनाई दे रही है।''

थाओ थाओ पहाड़ों की तरफ मुँह करके बोला : ''माफ कीजिए, मैं गलती पर था।''

घाटी फिर एक बार गूंज उठी और थाओ थाओ को अपनी ही आवाज दुबारा सुनाई दी। थाओ थाओ बहुत खुश हुआ और जोर से बोला, ''अब से हम एक दूसरे के अच्छे दोस्त बन गए।''

''अब से हम एक दूसरे के अच्छे दोस्त बन गए। '' की आवाज पहाड़ों में गूंज उठी।

थाओ थाओ की खुशी का ठिकाना न रहा और वह अपनी माँ से लिपटकर बोला, ''माँ, यह गूंज कह रही है कि अगर मैं दूसरों के साथ नम्रता से पेश आऊँगा, तो दूसरे भी मेरे साथ वैसा बर्ताव करेंगे। ''यह सुनकर माँ मुस्कुरा दी।

अगले दिन थाओ थाओ ने फूलों का एक गुलदस्ता गिलहरी को भेंट किया। गिलहरी ने खुशी से गुलदस्ता ले लिया और कहा, ''धन्यवाद।''

थाओ थाओ फिर भालू के पास गया। उसने बड़ी नम्रता के साथ भालू से कहा, ''मुझे माफ करना दोस्त, ''भालू ने थाओ थाओ की टोकरी उसको लौटा दी। उसके बाद से वे दोनों एक दूसरे के अच्छे मित्र बन गए।

स्रोत – डॉल्फिन प्रकाशन

स्कूल बने बोदल में

स्कूल बने बोदल में
धर्मसिंह बोदल में करे पढ़ाई।
गोलू घर में चलावे कड़ाई।
आलनपुर में मिले आलू।
रोज आवे बोदल में भालू।
शौचालय बनाओ घर घर में।
स्कूल बने बोदल में।
पानी है तो जीवन है।
बन्धा में सब निर्मल है।
बादल छाता आसमान में।
हरियाली छाती धरती पर।

धर्मसिंह गुर्जर,
उम्र–11 वर्ष, समूह–फूल

नया–नया

नया–नया एक कुर्ता।
पैरों में नया–नया जूता।
हाथों में नये–नये दस्ताने।
शरीर में नया–नया कोट।
माथे पर काली–काली टोपी।
चोखो लागे है दादा गोपी।

महेन्द्र गुर्जर,
उम्र–7 वर्ष, समूह–सागर

देवनारायण गुर्जर, कक्षा–3, बोदल स्कूल

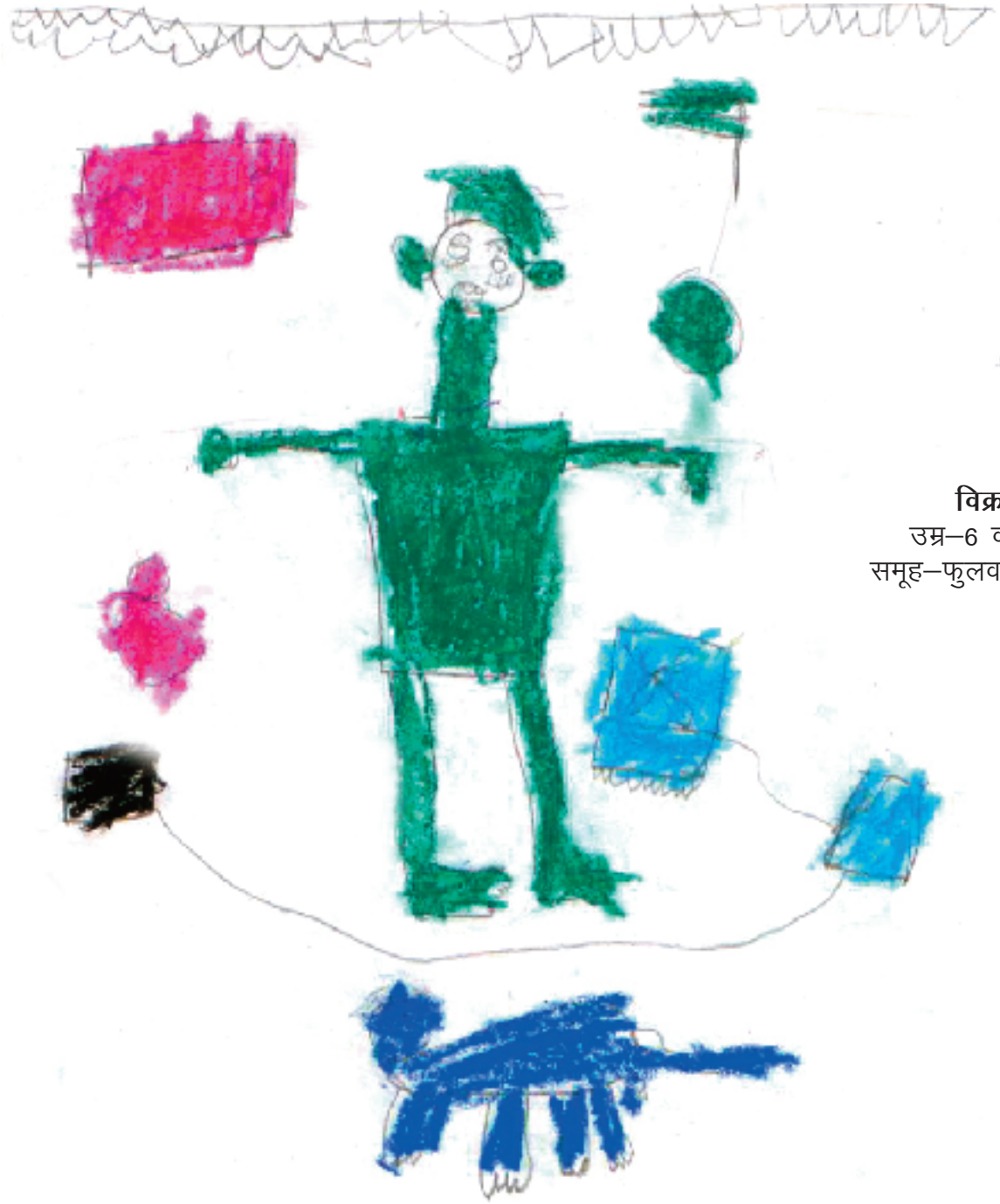

विक्रम,
उम्र–6 वर्ष,
समूह–फुलवारी

लालू–मालू

लालू मालू थे दो बंदर।
रहते थे जंगल के अंदर।।
साथ–साथ वो रहते थे।
लड़ते न झगड़ते थे।।
लालू स्कूल जाता था।
मालू घर पर रहता था।।
मालू बोला लालू से।
मैं भी तेरे साथ चलूँ।।
कक्षा के अंदर आया एक टीचर।
बोला, रहता कौन जंगल के अंदर।।
लालू मालू हम दो बंदर।
रहते हैं जंगल के अंदर।।

पुष्पेन्द्र, सोनू,
उम्र–11 वर्ष, समूह–उजाला

चलते–चलते कच्चे रस्ते

(उदय पाठशाला, फरिया
के बच्चों के लिए)

चलते–चलते कच्चे रस्ते,
देखो हम स्कूल आए हैं।
हाथ में रोटी पीठ पर बस्ता,
हम पढ़ने लिखने को आए हैं।
देखो गुरूजी देर हो जाए तो,
नहीं हमसे कुछ कहना तुम।
छोटे–छोटे पाँव हमारे,
पर ये नजरें बड़ी–बड़ी।
जब रस्ते में मिला मेंढ़क,
तो उसके पीछे भागे हम।
भागम भाग में रस्ता छूटा,
मन से स्कूल हो गया गुम।
जब रस्ते पर लौटे हम,
लगे दुखने छुटकी के पाँव।
बैठ गए हम बीच राह में,
ना चाहने पर भी रूके रहे।
उठकर थोड़ा और चले,
लाल रसीले बोर मिले।
सोचा गुरूजी तेरे लिए भी,
कुछ बोर ले आएँ हम।
चलने लगे जब फिर से हम,
मिंकी बोली बस इतने कम।
तो और थोड़े से तोड़े हमने,
पहुँच गए हम रूकते चलते।
देखो गुरूजी लेट हो गए,
हमसे कुछ ना कहना तुम।
छोटे छोटे पाँव हमारे,
और ये नजरें बड़ी बड़ी।
तुम ही बोलो क्या करें हम,
कैसे समय पर पहुंचे हम।

कविता और चित्र–ऋितिका चावला, शिक्षिका, उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया

कुँए का चूहा

एक था चूहा।
एक था कुँआ।
कुँए में चूहा रहता अकेला।
खुद से बातें करता अकेला।
सुनकर उसको कछुआ बोला।
कुँए में तू नहीं अकेला।
मैं भी इसके अंदर रहता।
तेरा मेरा घर है इसमें।
हम दोनों के परिवार हैं इसमें।
आते रहना जाते रहना।
मिलकर साथ रहेंगे भाई।
नाचेंगें गायेंगे, आँसू बहायेंगे।
सुख–दुख साथ में बिताएंगे।

सपना मीना,
उम्र–10 वर्ष, समूह–फूल

कोमल यादव,
कक्षा–7,
राजकीय विद्यालय,
डांगरवाड़ा

समझदार बकरी

मांगीबाई,
उम्र–7 वर्ष, समूह–सागर

एक गाँव था। उस गाँव में एक आदमी रहता था। उसके पास एक समझदार बकरी थी। आदमी उसे बहुत लाड़ प्यार से रखता और रोजाना जंगल में बकरी को चराने लेकर जाता था। एक दिन जब आदमी और बकरी जंगल से लौट रहे थे तो रास्ते में एक लम्बे बालों वाला भालू आ गया। आदमी उसे देखकर डर गया। आदमी ने सोचा आज भालू मेरी बकरी को जरूर खा जायेगा। बकरी बोली, ''तुम चिंता मत करो। मैं गेंद की तरह गोल हो जाती हूँ और भालू के पास जाती हूँ। भालू मुझे नहीं खाएगा। वह गेंद समझ कर लात मारेगा और लुड़कती–लुड़कती तुम्हारे पास आ जाऊँगी और तब तुम मेरे साथ भाग लेना और हम भागते–भागते घर पहुँच जायेंगे।'' फिर क्या था। बकरी ने जैसा सोचा वैसा ही हुआ।

सुमन प्रजापत, कक्षा–3, उम्र–9 वर्ष, रा.प्रा.वि. बोदल

जान बची

एक बार एक लोमड़ी थी। वह रोज एक तालाब में पानी पीने जाती थी। उस तालाब में एक मगरमच्छ रहता था। जो लोमड़ी को खाना चाहता था। मगर उसे मौका नहीं मिलता था। लोमड़ी भी बहुत चतुर थी मगरमच्छ से दूरी बनाए रखती थी। एक बार मगरमच्छ उसके पीछे–पीछे आ गया और उसके घर में घुस गया। लोमड़ी उसे देखकर चिल्लाते हुए भागने लगी। रास्ते में उसे एक शेर मिला उसने लोमड़ी से पूछा, ''क्यों भाग रही हो?'' लोमड़ी ने बताया कि ''मुझे मगरमच्छ खाना चाहता है और वह मेरे पीछे आ रहा है।'' शेर ने कहा कि तुम इस पेड़ पर चढकर छिप जाओ। लोमड़ी ने वैसा ही किया। मगरमच्छ नीचे से निकल गया और उसे लोमड़ी नहीं मिली। लोमड़ी ने राहत की सांस ली और सोचा जान बची तो लाखों पाए।

गोलू गुर्जर, कक्षा–4, रा.प्रा.वि. बोदल

शरबत प्रजापत,
उम्र–9 वर्ष,
समूह–सितारे

बोतल का भूत

एक बहुत बड़ा जंगल था। उसमें बहुत सारे जानवर रहते थे। एक बार उस जंगल में अकाल पड़ गया। जानवर प्यास के कारण मरने लगे। तभी जंगल के ऊपर काले बादल छाने लगे और चारों तरफ अंधेरा हो गया। जंगल में बहुत तेज बारिश हुई। सभी जानवर बहुत खुश हुए। प्यास से मर रहे जानवरों ने पानी पिया। धीरे–धीरे सूखे पेड़ों में पत्ते आने लगे और फिर पेड़ों में फल आने लग गये। कुछ दिनों पश्चात अचानक बहुत तेज आंधी आई। आंधी के कारण एक प्लास्टिक की बोतल उड़ती हुई जंगल में आ गई और एक आम के पेड़ में फंस गई। उस बोतल का ढक्कन खुलते ही उसमें से एक भूत निकला। भूत ने जंगल के जानवरों से कहा, ''मैं तुम्हें खाऊँगा।'' जानवरों ने कहा, ''नहीं–नहीं तुम हमें मत खाओ।'' सभी जानवर डर गये और भागने–छिपने लगें। एक खरगोश का छोटा बच्चा भाग नहीं सका। वह वहीं रह गया। उससे भूत ने पूछा, ''तुम्हारी माँ का क्या नाम है?'' खरगोश के बच्चे ने कहा, ''मेरी माँ का नाम मैना है।'' भूत ने कहा, ''तुम कितने भाई–बहिन हो?'' खरगोश के बच्चे ने कहा, ''मैं अकेला ही हूँ।'' भूत ने कहा, ''तब तो मैं तुम्हें ही खा लेता हूँ।'' खरगोश के बच्चे ने कहा, ''नहीं, तुम मुझे मत खाओ, मेरी माँ अकेली है, मेरे पिता भी नहीं हैं, वे मर गये हैं।'' भूत ने उस बच्चे को नहीं खाया। उसे खरगोश के बच्चे पर दया आ गई। भूत ने एक खरगोश का रूप ले लिया और खरगोश के बच्चे से कहा अब से मैं तुम्हें अपने बच्चे की तरह रखूंगा और तुम्हारा पिता बनकर तुम्हारे साथ रहूँगा। खरगोश का बच्चा उसे अपने साथ माँ के पास ले आया। फिर वे तीनों एक परिवार की तरह रहने लगे।

पिंटू प्रजापत, समूह–झरना, उम्र–10 वर्ष

सपना

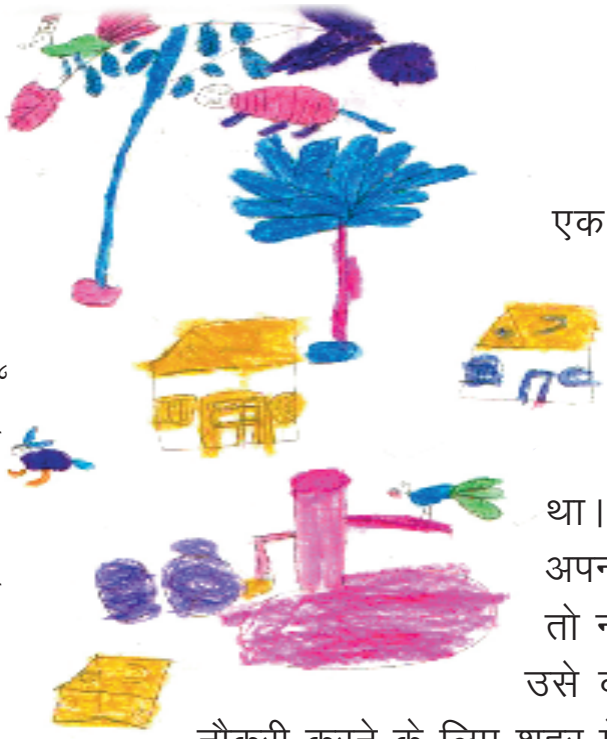

प्रिया, उम्र–6 वर्ष, समूह–सागर

एक गाँव था। उस गाँव में एक आदमी रहता था। उसकी एक लड़की थी। वह आदमी अपनी बेटी को अच्छे से पढ़ाकर उसका एक अच्छे घर में विवाह करना चाहता था। पर वह बहुत गरीब था। उसके पास इतने पैसे नहीं थे कि अपना सपना पूरा कर सके। कोई नौकरी भी तो नहीं थी उसके पास। वह चाहता था कि उसे कोई अच्छी सी नौकरी मिल जाये। वह नौकरी करने के लिए शहर में चला गया। वहाँ उसे एक सेठ मिला।

सेठ ने उससे कहा, ''मुझे एक अच्छे नौकर की आवश्यकता है।''

उस आदमी ने कहा, ''मैं भी नौकरी ही ढूंढ रहा हूँ।''

सेठ ने कहा, ''तुम मेरे यहीं नौकर का काम कर लो।''

आदमी ने कहा, ''ठीक है।''

सेठ बोला, ''तो फिर देर किस बात की, आज से ही काम पर लग जाओ। चलो जीप में बैठकर मेरे घर चलते हैं।''

वे जीप में बैठकर सेठ के घर पहुँच गये। वह आदमी उस सेठ की हवेली में काम करने लगा। वह आदमी बहुत अच्छा काम कर रहा था। सेठ कहा कि मैं तुम्हें एक दिन के 100 रूपये दिया करूंगा। आदमी ने सोचा सेठ जी सही पैसे दे रहे है। फिर धीरे–धीरे बहुत दिन बीत गये जब उसने बहुत सारे रूपये इकट्ठे कर लिये तो वह घर जाने लगा।

सेठ ने कहा, ''तुम इतने रूपयों का क्या करोगे?''

आदमी ने कहा, ''मेरी एक बेटी है, उसकी अच्छे से घर में शादी करूंगा।''

सेठ ने कहा ''मेरे भी एक बेटा है, मैं भी उसके लिए रिश्ता ढूंढ रहा हूँ। मुझे लगता है कि तुम्हारी बेटी भी तुम्हारी तरह मेहनती और ईमानदार होगी। तुम तुम्हारी बेटी की शादी मेरे बेटे के साथ ही कर दो।''

यह सुनकर आदमी बहुत खुश हो गया। उसने अपनी बेटी की शादी सेठ के लड़के के साथ कर दी और वे सब एक साथ वहीं रहने लगे।

आरती मीना, समूह–उजाला, उम्र–11 वर्ष

कुतिया

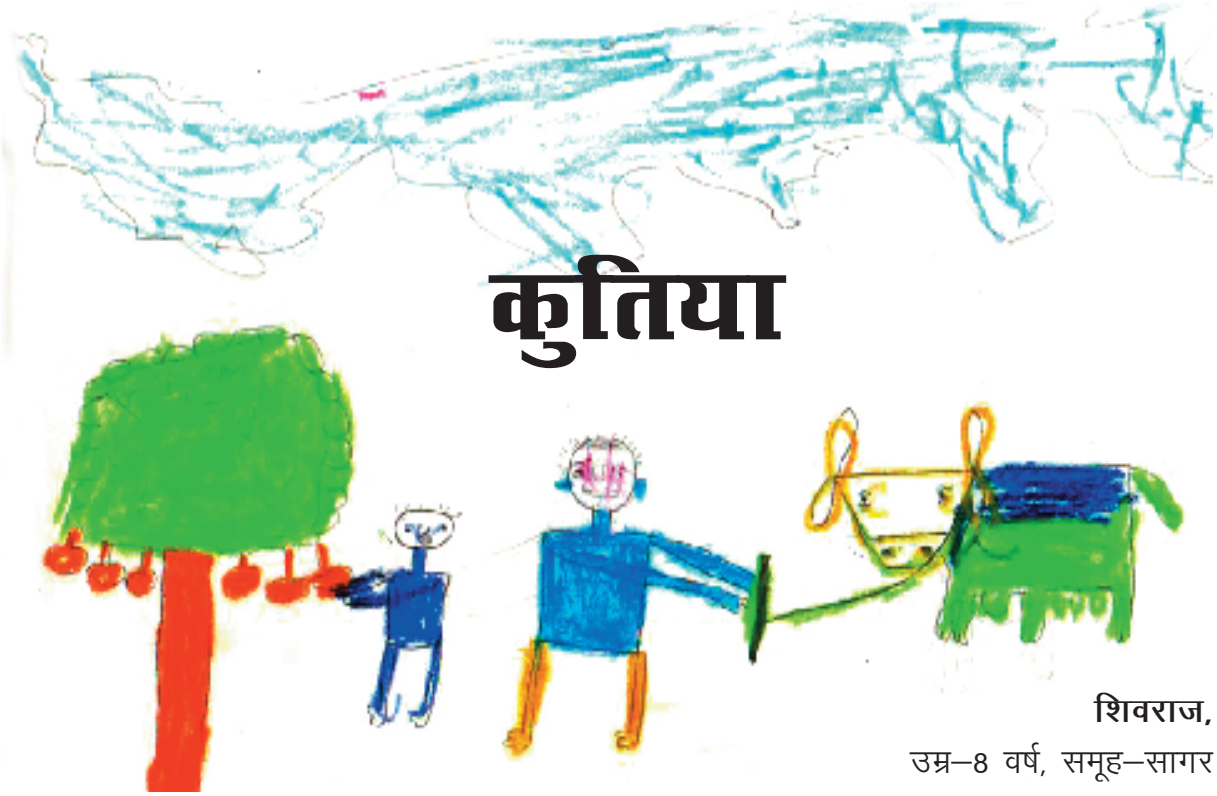

शिवराज,
उम्र–8 वर्ष, समूह–सागर

एक बार की बात है। एक बुढ़िया थी। उसके एक बेटा था। वह गाय चराने जाता था। जब गाय चराने जाता तो वह गाय का दूध निकाल कर घर रख जाता था। फिर उसकी माँ दूध को गरम कर देती थी। कुछ दिनों से एक कुतिया आती और सारे दूध को पी जाती थी। जब बुढ़िया का लड़का आता तो वह उसकी माँ से पूछता कि, ''दूध कहाँ है?'' उसकी माँ कहती, ''एक कुतिया पता नहीं कब आ जाती है और चुपके से सारा दूध पी जाती है।'' तंग आकर एक दिन लड़का बुढ़िया से कहता है, ''तू गाय को चराने जा और मैं आज इस कुतिया को देखता हूँ। बुढ़िया गाय चराने चली गई। लड़के ने अपनी माँ के कपड़े पहने और दूध गरम करके रख दिया। कुछ देर बाद वह कुतिया चुप–चाप घर के अन्दर आई। कुतिया से लड़के ने कहा, '' डरो मत आ जाओ आज तो बहुत सारा दूध है। तुम अपने दोस्तों को भी बुला लाओ।'' कुतिया अपने दोस्तों को बुलाने चली गई। कुछ देर बाद कुतिया अपने दोस्तों को ले आई। उनके साथ चोर भी थे। लड़का बोला, ''बैठ जाओ, मैं खीर बनाता हूँ।'' सारी जगह में चोर बैठ गये तो कुतिया बोली, ''मैं कहाँ बैठूँ?'' लड़का बोला, ''मैं बिठाता हूँ तुझे।'' लड़के ने चूल्हे में से गरम–गरम आग निकाली और उस पर कुतिया को बैठा दिया। कुतिया तेजी से दौड़ने लगी और उसके दोस्त भी उसके साथ उसके पीछे भागने लगे। भागते–भागते सब बहुत दूर चले गये। कुतिया बोली, ''अब कभी यहाँ नहीं आऊंगी।''

पवन गुर्जर, समूह–सागर, उम्र–9 वर्ष

सोनू सेन, उम्र–11 वर्ष, समूह–वीर शिवाजी

हम सब दोस्त

एक जंगल था। उस जंगल में एक हाथी रहता था। उस हाथी का नाम नन्दू था। उसका कोई दोस्त नहीं था। एक दिन वह जंगल में दोस्त ढूंढने चला। चलते–चलते उसे एक तालाब दिखा। उस तालाब के किनारे एक मेंढक बैठा हुआ था। हाथी ने जब उस मेंढक को देखा तो हाथी उससे बोला, ''हे मेंढक, तुम मेरे दोस्त बन जाओ।'' मेंढक ने कुछ देर सोचा और बोला, ''मैं आपका दोस्त बन जाऊँगा मगर मैं तो पानी के अंदर रहता हूँ और आप पानी के अंदर कैसे रह पायेंगे?'' हाथी ने जब यह सुना तो हाथी उदास होकर वहाँ से आगे चल दिया। चलते–चलते उसे एक लोमड़ी मिली। हाथी ने लोमड़ी से कहा, ''तुम मेरी दोस्त बन जाओ।'' लोमड़ी ने कहा, ''मैं तो माँस खाती हूँ, और तुम शाकाहारी जानवर हो।'' हाथी वहाँ से भी उदास होकर चल दिया। तभी जंगल में भगदड़ मच गई। सभी जानवर इधर से उधर भाग रहे थे। हाथी ने देखा तो हाथी भी भगदड़ वाले स्थान पर पहुँच गया। वहाँ एक शेर सभी जानवरों पर हमला कर रहा था, वह पागल हो गया था। हाथी को देखते ही शेर बोला, ''तुम कौन हो, तुम कौन होते हो मेरे रास्ते में आने वाले?'' हाथी ने शेर के कसकर एक पैर की मारी जिससे शेर कुलाटियाँ खाता हुआ दूर जाकर गिरा। अब उसकी अक्ल ठिकाने आ गई थी। वह वहाँ से भाग लिया। इसके बाद जंगल के सभी जानवर हाथी के पास आकर बोले, ''हम सभी आपके दोस्त हैं।'' वे सभी खुशी–खुशी रहने लगे।

विकास गुर्जर, कक्षा–6, राज.उच्च प्राथ. विद्या. डांगरवाड़ा

थोड़ा-थोड़ा

एक बार एक चिड़िया को भूख लग रही थी। वह भोजन की तलाश में इधर–धर उड़ रही थी। उसे एक आम का पेड़ दिखाई दिया। वहाँ पर पहले से ही बहुत सी चिड़ियाएँ, बंदर आदि बैठे हुए थे और आम खा रहे थे। उनके वजन व उछल–कूद की वजह से आम की टहनियाँ, पत्ते, आम जमीन पर बिखरे हुए पड़े थे। यह सब देख कर उस चिड़िया को बहुत दुःख हुआ। उस चिड़िया ने पेड़ से शिकायत की, ''आप अपने पूरे फलों को रोज थोड़ा–थोड़ा करके जमीन पर गिरा दिया करो जिससे ये सभी जानवर और पक्षी पेड़ पर चढ़ने की बजाय जमीन पर बैठकर आम

टीना प्रजापत,
राज.उच्च प्राथ. विद्या. डांगरवाड़ा

खा सके और पेड़ भी नहीं टूटेगा, पत्ते भी नहीं गिरेंगे और सभी जानवरों को छाया व भोजन भी मिल जाएगा।'' चिड़िया की बात सुनकर पेड़ थोड़ा मुस्कराया और उसने सभी जानवरों से बात करके ऐसा ही किया। पेड़ ने आम नीचे गिरा दिये। चिड़िया ने पेट भर के आम खाये और सभी जानवर व पक्षी रोज पेड़ के नीचे बैठकर आम खाने लगे।

भोला लुहार, कक्षा–2, रा.प्रा.वि. बोदल

मनीषा गुर्जर

दो बच्चे

अधिकांश घरों में बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी माता–पिता अपने थोड़े बड़े बच्चों पर डाल देते हैं। अगर माता–पिता किसान हैं तब तो घर में काम करने वाले सभी सदस्य कृषि और अर्थोपार्जन कार्यों में लग जाते हैं। शेष जो काम नहीं कर सकते उनको नवजात शिशुओं के पालन की जिम्मेदारी बिना मांगे अनिवार्य विषय के रूप में दे दी जाती है। इस काम में ना कोई शिक्षक होता है और ना कोई मद. दगार। बच्चे स्वयंपाठी छात्र की भाँति बिना पुस्तक इस देखभाल को करने का प्रयास करते हैं।

एक दिन मेरी बहिन अपने 10 माह के बच्चे को रखने की कहकर माँ के साथ पड़ौस के घर में हाथ मशीन से कुट्टी काटने गयी। माँ ने जाते जाते कहा, ''बबली हम कुट्टी करने जा रहे है, बच्चे का ध्यान रखना और कहीं चले मत जाना। हम थोड़ी देर में आ जायेंगे।'' शाम अब अंधेरे में बदलने लगी थी। मैं बच्चे के पास ही बैठ गया। कुछ देर बाद वह जागा। जैसे ही उसने कुलबुलाना शुरू किया तो मैं उसको हलके हाथ से थपथपाकर पुनः सुलाने का प्रयास करने लगा। पर मेरे थ. पथपाने से तो वह और अच्छी तरह जाग गया। मेरी कोशिश नाकाम होने पर मैने थपथपाने के साथ–साथ ओ, ओ, पुच–पुच की आवाज भी निकाली पर वह नहीं सोया। अब बच्चा आँखे खोलकर चारों तरफ देखने लगा मानों किसी को तलाश रहा हो। उसने अपना मुँह बिगाड़कर रोने जैसी आवाज निकालनी शुरू की। खतरे और आफत के संकेत पाकर मैं बच्चें को गोद में लेकर हिलाने लगा। चुप–चुप आ.

.आ.. ओ...ओ... की आवाजों से उसे बहलाने लगा। कहते हैं शाम के समय छोटे बच्चे अधिक रोते है। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। बच्चे ने धीरे–धीरे रोना शुरू कर दिया। मैं अपने प्रयास तेज करते हुए उससे बातें करने लगा। बातें भी ऐसी जैसे वो समझदार बच्चा हो। मैंने उससे कहा, ''प्यास लगी है, पानी पीएगा, चलो पानी पिलाते हैं। फिर मैं उसे गिलास से पानी पिलाता परन्तु वह पानी के मुँह भी नहीं लगाता और मुँह फेरकर हाथ से गिलास को दूर करता। अब वह पहले से तेज रोने लगा। बच्चे से बातें करते हुए मैं ही सवाल करता, उनके जवाब देता और उन पर अमल भी करता। इस तरह मैंने कहा, ''भूख लगी है, दूध पीएगा, ले ले ले ले दूध

शारदा,
उम्र–8 वर्ष,
समूह–सागर

पीओ, दूध पीओ भूख लगी है, दूध पीओ।'' पर उसने दूध भी नहीं पीया। दूध को हाथों से फैलाते हुए बच्चा जोर–जोर से रोने लगा। मेरी हर असफल कोशिश के बाद बच्चे का रोना तेज हो जाता और मेरी उम्मीद का सूरज डूबता जाता। बच्चे को चुप करने की कोशिश में मैं बर्तनों खिड़कियों को बजाता। पर बच्चा तो रेल के इंजन की तरह स्पीड़ बढ़ाता जा रहा था उसकी आँख से आँसुओं की झड़ी लग आई। नाक से रैंट बहने लगी। मुँह से लार–थूक आने लगा। मेरी हिम्मत टूट चुकी थी। चेहरा उदास हो गया। बच्चे ने मेरी गोद में मचलना शुरू कर दिया। उसे गोद में रखना मुश्किल हो गया। मैं बार–बार घर के दरवाजे तक देखकर आता कि माँ और बहिन कब आंएगी। उनके आने की आस में मैं बार–बार दरवाजे की तरफ

देखता पर उनके ना आने पर मन उदास हो जाता। बच्चे की आवाज पास के घरों तक जाने लगी। उसका रो रोकर बुरा हाल हो गया। मेरे हाथ पाँव फूल गये। आँखें भर आई और गला तो जैसे रूंध गया हो। मैं बच्चे की तरफ दया भाव से देखकर सुबकने लगा। बच्चे के रोने की आवाजों में मेरी भी आवाज शामिल हो गयी। मैने बच्चे को चुप कराने के प्रयास बंद कर दिये थे। अब मैं उसे गोद में उठाता कभी उतारता और रोता जाता। रोने से मेरी भी हिचकियाँ निकलने लगी अब मैं बच्चें को उठाए दरवाजे पर खड़ा जोर–जोर से रोने लगा। मुझे रोता देखकर बच्चा और भी तेज रोता और उसे रोता देखकर मेरे आँसू और रोना बढ़ता। मानों रोने का कम्पीटीशन चल रहा हो। अपना काम खत्म कर जब माँ और बहिन घर आंई तो हमें देखते ही चारे की कुट्टी को एक तरफ पटका और बहिन ने बच्चे को गोद में लिया और माँ ने मुझे सीने से लगा लिया। दोनों हमें चुप कराने लगी और पूछती भी जाती कि ''क्या हुआ, तुम क्यों रो रहे हो? चुप हो जाओ, मैं आ गयी हूँ, चुप हो जा रो मत।'' पर मैं तो काफी देर बाद कुछ बोल पाया। धीरे–धीरे हम दोनों बच्चों को हमारी माताओं ने चुप कराया।, हमें दुलारा तथा थकान और काम भूलकर प्यार किया। माताओं का प्यार पाकर हम दोनों बच्चे पहले की तरह स्वस्थ हो गये। माताएँ फिर अपने–अपने काम करने लगी और हम साथ–साथ खेलने लगे।

बबली

शिवानी,
उम्र–12 वर्ष,
समूह–शीशम

गुस्सा

एक गाँव में एक औरत रहती थी। उसके तीन बच्चे थे। वह बहुत गरीब थी। उसके पास खाने के लिए अनाज भी नहीं था। ऐसे में उसने अपने भाई के घर जाने का फैसला किया और वह अपने तीनों बच्चों को लेकर अपने भाई के गाँव में पहुँच गई। जब वह अपने भाई के घर पहुँची तो उसकी भाभी उसको देखकर किवाड़ बंद कर लेती है। अपनी भाभी के इस व्यवहार पर वह बहुत दुःखी होती है। दुःख के कारण वह औरत रोने लग गई और अपने तीनों बच्चों को लेकर वापस अपने घर

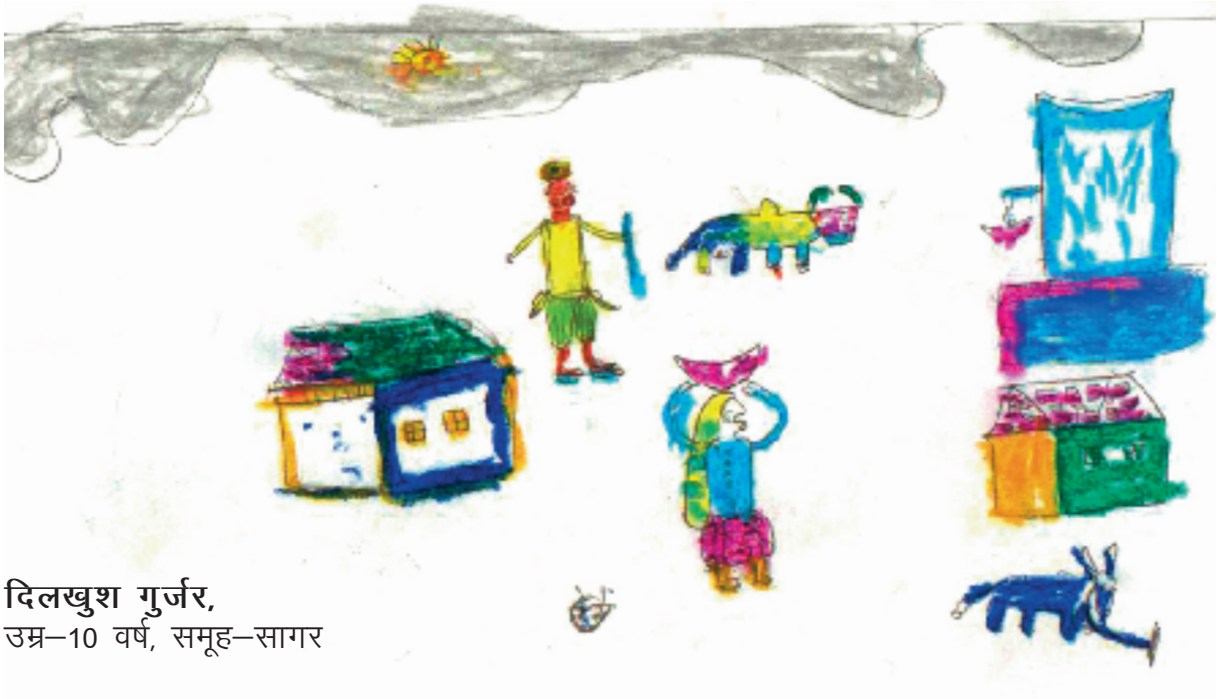

दिलखुश गुर्जर,
उम्र–10 वर्ष, समूह–सागर

चली गई। शाम को जब उसका भाई काम से लौटकर वापस आया तो पड़ौसी ने उसकी बहिन की सारी बात उसे बता दी। यह सुनकर उसे बहुत गुस्सा आया। इसलिए उसने अपनी पत्नी को सबक सिखाने की सोची। पर वह अपनी पत्नी से लड़ना नहीं चाहता था। इसलिए उसने अपनी पत्नी से कहा, ''तुम्हारी माँ के घर में आग लग गई है। सब कुछ जलकर राख हो गया है। खाने के लिए अनाज भी नहीं है। इसलिए तुम बैलगाड़ी में अनाज भर दो मैं उसे वहाँ दे आता हूँ। आखिर बुरे वक्त में हम उनकी मदद नही करेंगे तो और कौन करेगा भला।'' उसकी पत्नी ने झट–पट अनाज से गाड़ी भर दी तथा पति के साथ एक लड़के को भी भिजवा दिया। रास्ते में उस व्यक्ति ने अपनी बहिन के घर की तरफ वाले रास्ते में गाड़ी

मोड़ ली। उसने सारा अनाज अपनी बहिन के यहाँ खाली कर दिया और अपनी पत्नी के व्यवहार के लिए बहिन से माफी मांगी। बहिन को हिम्मत देकर वह वापस अपने घर आ गया। घर आने पर लड़के ने सारी बात माँ को बता दी। सारी बात सुनकर उसकी पत्नी को बहुत गुस्सा आया और वह अपने आप को जलाने लगी। उसने कहा, ''मैं तेरी बहिन को गधे के ऊपर बैठाकर, काला मुँह करके, चप्पलों की माला पहनाऊंगी, जब ही मुझे चैन आयेगा। बेचारा पति सोचने लगा अब क्या करे। बहिन को बचाए या पत्नी को। उसका पति उसकी बहिन के पास तो नहीं गया

नंदिनी महावर, उम्र–11 वर्ष, समूह–खेजड़ी

और अपनी ससुराल में सास के पास चला गया। वहाँ जाकर उसने कहा, ''तुम्हारी बेटी बीमार हो गई है। वह कह रही है कि मेरी माँ जब तक गधे के ऊपर बैठकर, काला मुँह करके, चप्पलों की माला पहनकर नहीं आयेगी मैं ठीक नहीं होऊंगी।'' उसकी माँ अपनी बेटी के लिए यह सब करने के लिए तैयार हो गई। वह गधे पर बैठकर, काला मुँह करके बेटी के घर आ गई। बेटी उसे न पहचान सकी और चप्पलों की माला पहना दी और फिर ठीक हो गई। बाद में जब उसने अपनी माँ को पहचाना तो यह देखकर वह बहुत दुःखी हुई।

आरती गुर्जर, समूह–तिलक, उदय पाठशाला फरिया

मटरगश्ती बड़ी सस्ती

भाषा की सहेलियाँ
बूझो यार पहेलियाँ

1 12 घोड़े, 30 गाड़ी, 365 करे सवारी।
2 देखो जादूगर का हाल, डाले हरा निकले लाल।
3 एक खेत में ऐसा हुआ, आधा बगुला आधा सुआ।
4 छोटा सा धागा, सारी बात ले भागा।
5 ऐसा शब्द लिखिए जिससें फूल, मिठाई, फल बन जाए।

हवलदार नायक, उम्र–15 वर्ष,
राजकीय विद्यालय बंजारों की ढाणी

ममता साहू, शिक्षिका

हीहीही-ठीठीठी

1 पिता बेटे से – रिजल्ट कैसा रहा?
बेटा – वो हेडमास्टर जी का बेटा फेल हो गया।
पिता – तुम्हारे रिजल्ट का क्या हुआ?
बेटा – अपने मिनिस्टर साहब का बेटा भी फेल हो गया।
पिता – और तेरा?
बेटा – और तो और कलेक्टर साहब तक का बेटा फेला हो गया।
पिता – अरे गधे, मैं तेरे रिजल्ट की बात कर रहा हूँ।
बेटा – इतने बड़े–बड़े लोगों के बेटे पास नहीं हो सके तो मैं कौन सा अमेरिका के प्रेसिडेंड का बेटा हूँ जो पास हो जाता।

कृष्णा जैन, राजकीय उच्च प्रा. विद्यालय, डूंगरवाड़ा

2 पिता पुत्र से – आज तुम स्कूल क्यों नहीं गए?
पुत्र – कल हम बच्चों को स्कूल में तौला गया था, आज बेच दिया जायेगा। इसलिए मैं आज स्कूल नहीं गया।

3 अध्यापक – बच्चों किसी ऐसी जगह का नाम बताओ जहाँ पर बहुत सारे लोग हों, फिर भी तुम अकेला महसूस करते हो।
एक बच्चा – परीक्षा कक्ष।

इन्टरनेट से लिए गये।

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

जितेन्द्र नायक, उम्र–11 वर्ष, समूह–वीर शिवाजी

बहुत पहले की बात है। एक खजूर का पेड़ था। उस पेड़ के नीचे हरी–हरी घास उगी हुई थी। उस हरी–हरी घास पर एक लड़की नाच रही थी। उस लड़की के ऊपर चाँद ऐसा लग रहा था मानो उसके सिर पर बैठा हो। खजूर का पेड़ जोर–जोर से हँसने लगा। यह देखकर लड़की बहुत खुश हुई.....

मंजू मीना, *समूह–उजाला, उम्र–9 वर्ष द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

चिड़िया चुगने जाती है।

बच्चे का खाना लाती है।....

रामावतार नायक, *उम्र–उम्र–10 वर्ष, समूह–वीर शिवाजी द्वारा शुरू की गई कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

पहेलियों के ज़वाब –

1. माह, माह में दिन, वर्ष में दिन 2. पान 3. मूली 4. टेलीफोन 5. गुलाब जामुन

सुनीता लुहार,
उम्र–7 वर्ष, समूह–बरगद